MAHARAJA COLLEGE ,ARA

PG @ SEM- III

CC-10 : आधुनिक हिंदी काव्य

Unit – 1 साकेत (मैथिलीशरण गुप्त)

साकेत (प्रकाशन वर्ष : 1932 ई.)

क्रमशः –

रघुकुल की सबसे दुःखिनी बधु उर्मिला का गौरव–गान ही 'साकेत' के कवि का मुख्य लक्ष्य रहा है। इसलिए आगे के सभी घटनाओं का वर्णन कवि ने साकेत में रह कर ही किया है। वे उर्मिला को छोड़कर नहीं जा सके हैं। एक बार चित्रकूट गये भी तो संपूर्ण साकेत–समाज, उर्मिला सहित ही गए। राम के वन गमन के बाद दशरथ–मरण और उर्मिला की मूर्च्छा आदि का वर्णन है। भरत और शत्रुघ्न ननिहाल से आ जाते हैं। वस्तुस्थिति से अनजान दोनों भाई बहुत दुखी रहते हैं, अपने बड़े भाई श्रीराम को लौटाने के लिए चित्रकूट जाते हैं। चित्रकूट की सभा में माता कैकेयी भी अपनी सफाई देती है। महाकवि वाल्मीकि और गोस्वामी तुलसीदास अपने रामकथा में दुष्कर्मा

कैकेयी को अपनी बात कहने का अवसर नहीं देते हैं। गुप्त जी सर्वप्रथम यह अवसर कैकेयी को प्रदान करते हैं। इस प्रकार कवि मैथिलीशरण गुप्त ने माता कैकेयी के दोष–परिहार का सफल प्रयत्न किया है। इन सब प्रयत्नों के पश्चात् भी भगवान राम नहीं लौटते हैं। यह अष्टम् सर्ग तक की कथा है।

नवम् सर्ग में उर्मिला का विरह वर्णन है। दशम् सर्ग में भी उर्मिला का विरह–वर्णन ही है, जिसमें रामायण के बालकाण्ड की कथा उर्मिला–स्मृति के रूप में आयी है। पहले की चिरपरिचित कथा का वर्णन आगे किया गया है, जिसमें निश्चय ही रोचकता और उत्सुकता की वृद्धि हुई है। ग्हरहवां और बारहवां सर्ग में शूर्पणखा–प्रसंग, खरदूषण–वध, सीता–हरण, लक्ष्मण–शक्ति प्रसंग आदि घटनाओं का वर्णन है। शूर्पणखा के विकलांग होने तथा खरदूषण के वध की बात शत्रुघ्न सुनाते हैं, इस सूचना का पता शत्रुघ्न को एक व्यवसायी से लगता है। इसके बाद लक्ष्मण–शक्ति तक की कथा की जानकारी संजीवनी बूटी के लिए आये हुए हनुमान जी से चलती है। हनुमान द्वारा लक्ष्मण जी के मूर्च्छित हाने

का सूचना मिलते ही अयोध्या की सेना लेका–प्रस्थान के लिए उद्धत हो जाती है। लेकित तत्काल राजगुरु वशिष्ठ आकर सेना–प्रयान को रोकते हैं। शेष युद्ध वशिष्ठ जी सबको अपनी योग–दृष्टि के माध्यम से साकेत में ही दिखा देते हैं। इस प्रकार कवि मैथलीशरण गुप्त ने चिरपरिचित आख्यान को मौलिकता और विश्वसनीयता के साथ प्रस्तुत किया है। जिसमें उन्हें पूरी सफलता मिली है। वे अपनी रामकथा को मौलिक बनाने के लिए कुछ नवीन उद्भावनाएं की भी सृष्टि की हैं। उदाहरण स्वरूप – उर्मिला विषयक संपूर्ण कथा, कैकेयी के विक्षोभ का मनोवैज्ञानिक कारण, चित्रकूट की सभा में कैकेयी द्वारा अपनी बात रखने का प्रसंग, पहले की घटना का बाद में वर्णन, लक्ष्मणजी को शक्ति लगने की सूचना मिलते ही अयोध्यावासियों को उद्धत होना और सशस्त्र होकर लंका की ओर प्रस्तान करने की योजना आदि।